संरक्षक की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

सर्वविदित है कि जल मानवजाति की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक प्रमुख प्राकृतिक संसाधन है। यह आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संसाधन है। पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का मात्र 1% जल ही उपयोग में लाया जा सकता है। भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में आज शुद्ध जल उपलब्धता की स्थिति बदतर होती जा रही है जिससे भविष्य में भीषण जल संकट की संभावना है। पिछले 5-6 दशकों में कुछ क्षेत्रों में भूजल का अत्यधिक दोहन हुआ है। इस समय ज्यादातर भूजल स्रोत या तो सूख गए हैं या उनका जल स्तर नीचे चला गया है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण तथा औद्योगीकरण जैसे मानवीय कारणों ने हमारे पर्यावरण को दूषित कर दिया है। आज रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग ने हमारे जल के सभी स्रोतों यथा; कुओं, तालाबों, नदियों एवं सागरों को भी प्रदूषित कर दिया है। आज हमें कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि और कहीं पेयजल की गुणवत्ता तथा जल की कमी आदि जैसी विभिन्न समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। घरेलू एवं सिंचाई जलापूर्ति में भूजल का अहम योगदान है परंतु जिस गति से इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है उससे कई स्थानों पर भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है और इसमें प्रदूषण बढ़ रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे विकास के फलस्वरूप हमारे वैज्ञानिक जल के क्षेत्र में नए-नए आविष्कार एंव शोध कार्य कर रहे हैं जिससे कि आने वाले समय में जल संबंधी चुनौतियों का बेहतर ढंग से मुकाबला किया जा सके। आज के समय में जल संसाधन प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। देश के हर नागरिक को जल संरक्षण से जुड़ना होगा। व्यर्थ बहने वाले जल को एकत्र कर उसे जमीन के अन्दर पहुंचाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि भूजल स्तर बढ़ सके और हमें पर्याप्त जल प्राप्त हो सके।

हिंदी भाषा के माध्यम से तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों की जानकारियों को सामान्य जनमानस तक पहुंचाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान पिछले 11 वर्षों से इस पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। विद्वत लेखकों की रोचक एवं महत्वपूर्ण रचनाओं के सहयोग से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है और इसकी हर स्तर पर सराहना की जा रही है। हमें ज्ञात है कि जीवन के इस अति आवश्यक संसाधन की सुरक्षा की जिम्मेदारी देश के हर नागरिक की है। आज हमें जल के महत्व, उसके संरक्षण तथा बूंद-बूंद के सदुपयोग की जानकारी आम जनता को देने की आवश्यकता है। हमारे देश में समय और स्थान के अनुसार जल संबंधी समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं। इन्हीं समस्याओं के समाधानों और उपायों की जानकारी को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य हमारी यह पत्रिका विगत 11 वर्षों से निरंतर करती आ रही है।

मुझे यह कहते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्षभर हिंदी की भिन्न-भिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। हमारा प्रयास रहता है कि प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। उल्लेखनीय है कि संस्थान के कार्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के हैं और आमतौर पर यह समझा जाता है कि तकनीकी कार्यों का निःष्पादन हिंदी में कर पाना सहज नहीं है। फिर भी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए इन कार्यों में हिंदी का समुचित प्रयोग करने के प्रयास जारी हैं और इस दिशा में धीरे-धीरे ही सही लेकिन काफी हद तक सफलता मिल रही है।

मैं उन समस्त विद्वत लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक, महत्वपूर्ण तथा उपयोगी लेख भेजकर इसके प्रकाशन में हमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पत्रिका का संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

(डॉ. जयवीर त्यागी)